International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in October 2024, ISSN -2393-8048

गांधीजी का राजनीतिक दर्शन और राष्ट्रीय एकता में योगदान

Abhinawa Pokhriyal, Research Scholar, Glocal School of Arts and Social Science
Dr. Waseem Ahmed, Assistant Professor, Glocal School of Arts and Social Science

सार

महात्मा गांधी आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली राजनीतिक चिंतकों और स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उनका राजनीतिक दर्शन सत्य, अहिंसा, स्वराज, सत्याग्रह और सर्वोदय जैसे नैतिक एवं मानवीय सिद्धांतों पर आधारित था। गांधीजी ने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं माना, बल्कि इसे नैतिकता और सामाजिक न्याय की स्थापना का साधन समझा। भारत जैसे बहु–सांस्कृतिक और बहु–धार्मिक समाज में राष्ट्रीय एकता की स्थापना एक बड़ी चुनौती थी। गांधीजी ने अपने आंदोलनों और विचारों के माध्यम से विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और वर्गों के लोगों को एक साझा राष्ट्रीय पहचान के अंतर्गत संगठित किया। उनके नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन एक जनांदोलन बन गया जिसमें किसान, मजदूर, महिलाएँ और वंचित वर्ग भी सक्रिय रूप से शामिल हुए। यह शोध–पत्र गांधीजी के राजनीतिक दर्शन का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि उनके सिद्धांतों और आंदोलनों ने भारतीय राष्ट्रीय एकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही यह अध्ययन वर्तमान समय में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डालता है।

कीवर्डः गांधीवाद, राजनीतिक दर्शन, राष्ट्रीय एकता, सत्याग्रह, अहिंसा, स्वराज

परिचय

महात्मा गांधी का भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने भारतीय राजनीति को नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया। गांधीजी का मानना था कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज में न्याय, समानता और शांति स्थापित करना होना चाहिए। भारत एक विविधताओं से भरा देश है जहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ पाई जाती हैं। औपनिवेशिक काल में इन विविधताओं के कारण राष्ट्रीय एकता बनाए रखना एक बड़ी चुनौती थी। गांधीजी ने अपनी विचारधारा, सिद्धांतों और आंदोलनों के माध्यम से इन विविधताओं को एकता में बदलने का प्रयास किया। उन्होंने अहिंसा, सत्य और सत्याग्रह को अपने संघर्ष का मुख्य आधार बनाया। इन सिद्धांतों के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध शांतिपूर्ण लेकिन प्रभावी आंदोलन चलाए। उनके नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे कई महत्वपूर्ण आंदोलन हुए। गांधीजी के विचारों और आंदोलनों से लाखों भारतीय प्रेरित हुए और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हुए। उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय चेतना और एकता की भावना को मजबूत किया। इसी कारण गांधीजी को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नैतिक और वैचारिक नेता माना जाता है और उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में भी सम्मान दिया जाता है।

साहित्य समीक्षा

चकबर्थी, बिद्युत (2006) की पुस्तक महात्मा गांधी का सामाजिक और राजनीतिक चिंतन में महात्मा गांधी के सामाजिक और राजनीतिक विचारों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ में लेखक ने गांधीजी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों को उनके राजनीतिक सक्रियता के केंद्र के रूप में रखा है तथा दिखाया है कि कैसे ये सिद्धांत ब्रिटिश शासन के विरुद्ध चलाए गए आंदोलनों का ध्रुव बन गए। पुस्तक गांधीजी द्वारा स्थापित हारिजन समाचार पत्र में प्रकाशित उनके विचारों को भी संदर्भित करती है, जिससे पाठक को यह समझने में मदद मिलती है कि गांधी का सामाजिक चिंतन उनके लेखन में कैसे विकसित हुआ।

पारेळ, ए. जे. (2000) की पुस्तक गांधी का दर्शन और सामंजस्य की खोज महात्मा गांधी के दर्शन को सैद्धांतिक, ऐतिहासिक और विचारात्मक परिप्रेक्ष्य से विस्तृत रूप में प्रस्तुत करती है। इस ग्रंथ में लेखक ने गांधीजी के राजनीतिक, नैतिक और सामाजिक चिंतन को एक समग्र ढांचे में समझाया है, जिसमें यह दिखाया गया है कि कैसे गांधी का दर्शन आधुनिक समाज की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। पारेळ की दृष्टि में गांधी का दर्शन केवल एक राजनीतिक रणनीति नहीं था, बल्कि यह एक जीवन दृष्टि, नैतिकता और सामाजिक समरसता का मार्ग भी था। पुस्तक में गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों को उनके दर्शन के मूल तत्व के रूप में विस्तृत किया गया है। पारेळ बताते हैं कि गांधीजी ने अहिंसा को केवल विरोध का तरीका नहीं माना, बल्कि यह एक नैतिक शक्ति थी जिससे व्यक्ति और समाज दोनों को बदलने की क्षमता है। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि गांधीजी का दर्शन विरोध, संघर्ष और सामंजस्य के बीच संतुलन स्थापित करता है, जिस हेतु उन्होंने समस्याओं के समाधान में सहानुभूति, संवाद और सहयोग को आवश्यक बताया।

नंदा, बी. आर. (2002) की पुस्तक महात्मा गांधीः एक जीवन चरित्र महात्मा गांधी के जीवन, विचार और नेतृत्व का विस्तृत तथा गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इस ग्रंथ में लेखक ने गांधीजी के व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन के विविध आयामों को ऐतिहासिक संदर्भ के साथ समझाया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गांधी का दर्शन उनके व्यक्तिगत अनुभवों और संघर्षों से किस प्रकार उभरकर सामने आया। नंदा इस पुस्तक में गांधीजी के सत्याग्रह, अहिंसा, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक समरसता के सिद्धांतों का विवेचन करते हुए दिखाते हैं कि इन सिद्धांतों ने उनके समग्र जीवन और सार्वजनिक आंदोलनों को किस दिशा और मजबूती से प्रभावित किया। लेखक के अनुसार, गांधीजी की विचारधारा केवल सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं थी, बल्कि यह व्यवहारिक रूप से भी निहित थी कृ यानि गांधी ने अपने जीवन में ही अपने विचारों को लागू किया और वास्तविक संघर्षों से उन्हें संवारा।

गांधीजी का राजनीतिक दर्शन

महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज और सर्वोदय पर आधारित था। उनके अनुसार राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में न्याय, समानता और शांति स्थापित करने का माध्यम होनी चाहिए। गांधीजी का मानना था कि एक सफल राजनीतिक नेतृत्व के लिए नैतिक मूल्यों और मानवता के सिद्धांतों का पालन अनिवार्य है।

- **सत्य और अहिंसाः** गांधीजी के राजनीतिक विचारों का मूल आधार सत्य और अहिंसा था। उनका विश्वास था कि सत्य ही सर्वोच्च नैतिक शक्ति है और अहिंसा सत्य तक पहुँचने का सबसे प्रभावी माध्यम है। गांधीजी का तर्क था कि हिंसा से समाज में केवल घृणा, द्वेष और अस्थिरता पैदा होती है, जबकि अहिंसा से सहानुभूति, सहयोग और विश्वास की भावना विकसित होती है। उनका यह भी मानना था कि अहिंसा केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का सशक्त उपकरण है, जो व्यापक जनसमर्थन और नैतिक प्रभाव पैदा करता है।
- **सत्याग्रह का सिद्धांतः** गांधीजी ने सत्याग्रह को राजनीतिक आंदोलन की मुख्य रणनीति के रूप में अपनाया। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिए शांतिपूर्ण और नैतिक संघर्ष। उन्होंने इस सिद्धांत का प्रयोग कई आंदोलनों में किया, जैसे चंपारण सत्याग्रह और नमक सत्याग्रह, जिन्होंने भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित किया। इन आंदोलनों ने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग नहीं की, बल्कि लोगों में सामूहिक चेतना और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित की।
- **स्वराज की अवधारणाः** गांधीजी के अनुसार स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है। इसके साथ ही आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्वतंत्रता भी शामिल है। उन्होंने ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें गाँवों को स्वशासी, आत्मनिर्भर और न्यायपूर्ण इकाइयों के रूप में विकसित करने पर जोर दिया गया। उनका मानना था कि यदि समाज के प्रत्येक गाँव और व्यक्ति को निर्णय लेने और आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिले, तो सम्पूर्ण राष्ट्र सशक्त और संतुलित बन सकता है।
- **सर्वोदय का सिद्धांतः** गांधीजी ने अपने दर्शन में सर्वोदय का महत्व विशेष रूप से रेखांकित किया। सर्वोदय का अर्थ है "सभी का कल्याण।" उनके अनुसार समाज का वास्तविक विकास तभी संभव है जब समाज के सबसे कमजोर, गरीब और वंचित व्यक्ति का भी उत्थान सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि केवल एक वर्ग के लाभ के लिए प्रगति अधूरी होती है। समाज तभी समृद्ध और स्थिर बन सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सम्मान, सुरक्षा और अवसर के साथ व्यतीत हो।

राष्ट्रीय एकता में गांधीजी का योगदान

महात्मा गांधी का योगदान केवल भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और नैतिक नेतृत्व के क्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी का मानना था कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल शासन से मुक्ति नहीं है, बल्कि इसके साथ समाज में समानता, न्याय और सामाजिक कल्याण भी सुनिश्चित होना आवश्यक है। उनके दर्शन और नेतृत्व ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों को एकजुट किया और स्वतंत्रता संग्राम को सिर्फ राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि जन चेतना और नैतिक आंदोलन में परिवर्तित किया।

- **स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन बनाना**

गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन एक वृहद जन आंदोलन बन गया। उन्होंने यह समझा कि ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष तभी प्रभावी होगा जब देश के हर वर्ग और क्षेत्र के लोग सक्रिय रूप से भाग लें। इसके लिए उन्होंने कई आंदोलनों की शुरुआत की, जिनमें प्रमुख थेः

- **असहयोग आंदोलन (1920–1922)** – इसमें छात्रों, शिक्षकों, व्यापारियों और किसानों को ब्रिटिश संस्थाओं, शिक्षा प्रणाली और विदेशी उत्पादों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित किया गया।

- **सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)** – नमक कानून के विरोध में गांधीजी ने शांतिपूर्ण और विधिक उल्लंघनों के माध्यम से जनता को ब्रिटिश कानूनों के खिलाफ उठ खड़ा होने के लिए संगठित किया।
- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)** – यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम का निर्णायक चरण था, जिसमें लाखों भारतीयों ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

इन आंदोलनों ने देश के विभिन्न वर्गों, जातियों और क्षेत्रों के लोगों को एकजुट किया। गांधीजी की रणनीति ने यह सुनिश्चित किया कि आंदोलन शहरी और शिक्षित वर्ग तक सीमित न रहे, बल्कि ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों तक फैल जाए। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता आंदोलन सर्वसमावेशी और लोकतांत्रिक रूप में विकसित हुआ।

- **धार्मिक सद्भाव का प्रचार**

भारत में धार्मिक विविधता के कारण कई बार साम्प्रदायिक तनाव और हिंसा उत्पन्न होती रही। गांधीजी ने हिंदू–मुस्लिम एकता को राष्ट्रीय एकता का आधार माना। उन्होंने साम्प्रदायिक हिंसा के समय शांतिपूर्ण विरोध, संवाद और मिल–जुलकर कार्य करने की नीति अपनाई। उन्होंने बार–बार कहा कि धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं का सम्मान किए बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है। गांधीजी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए रैली, बैठक और संवाद के माध्यम से सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा दिया, जिससे अलग–अलग समुदायों के बीच विश्वास और सहयोग की भावना मजबूत हुई।

- **सामाजिक समानता और अस्पृश्यता उन्मूलन**

गांधीजी ने समाज में जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता के खिलाफ सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने दलितों को "हरिजन" कहकर समाज में सम्मान दिलाने का प्रयास किया। गांधीजी ने दलितों के लिए शिक्षा, सामाजिक अधिकार और रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने हेतु आंदोलनों का संचालन किया। उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता तब ही संभव है जब समाज के सबसे कमजोर और वंचित वर्ग का उत्थान हो। गांधीजी के प्रयासों ने भारतीय समाज में सामाजिक समानता की स्थायी नींव रखी और अस्पृश्यता उन्मूलन में अहम योगदान दिया।

- **महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी**

गांधीजी ने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं को सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल किया। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता बढ़ी। गांधीजी के इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आंदोलन की सामाजिक आधारशिला मजबूत हुई और महिलाओं ने सामाजिक सुधार और राष्ट्र निर्माण में योगदान देना शुरू किया।

गांधीवादी विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

महात्मा गांधी के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं और वे न केवल भारत बल्कि वैश्विक स्तर पर समाज, राजनीति, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। गांधीजी का दर्शन सत्य, अहिंसा, सामाजिक न्याय, समानता, सर्वोदय और सादगीपूर्ण जीवन के मूल सिद्धांतों पर आधारित था, जो आधुनिक समय में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरक हैं। गांधीजी ने अहिंसा को केवल व्यक्तिगत जीवन का नैतिक सिद्धांत नहीं माना, बल्कि इसे राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का प्रभावी और नैतिक उपकरण बताया। आज के वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ आतंकवाद, हिंसा और सशस्त्र संघर्ष आम हैं, गांधी का यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि किसी भी समस्या का समाधान शांति, संवाद और सहिष्णुता के माध्यम से ही स्थायी और प्रभावशाली रूप में संभव है। उनके अनुसार अहिंसा केवल विरोध का माध्यम नहीं, बल्कि यह समाज में विश्वास, सहयोग और सहानुभूति की भावना विकसित करने का एक शक्तिशाली साधन है, जो किसी भी राष्ट्र और समुदाय को लंबे समय तक स्थायित्व और समरसता प्रदान कर सकता है। गांधीजी के सामाजिक दर्शन में समानता और सामाजिक न्याय का विशेष महत्व है। उन्होंने समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के उत्थान को राष्ट्रीय प्रगति का अपरिहार्य अंग माना। उनके सर्वोदय के सिद्धांत के अनुसार, समाज तभी प्रगतिशील और न्यायपूर्ण बन सकता है जब सबसे गरीब, पिछड़ा और वंचित व्यक्ति भी सम्मान, अवसर और अधिकारों का लाभ प्राप्त करे। आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में जाति, धर्म, लिंग और आर्थिक असमानता आज भी व्यापक रूप से विद्यमान है, और गांधीजी का यह संदेश कि सभी के कल्याण को सुनिश्चित किए बिना राष्ट्रीय एकता और स्थायित्व संभव नहीं है, आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनके विचार आज के सामाजिक और आर्थिक नीतिकारों के लिए मार्गदर्शक हैं और नीतियों को अधिक समावेशी, न्यायपूर्ण और नैतिक बनाने में मदद कर सकते हैं।

इसके साथ ही गांधीजी ने सादगीपूर्ण जीवन और पर्यावरण संरक्षण पर भी जोर दिया। उनका मानना था कि व्यक्ति और समाज का विकास तभी स्थायी होता है जब प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए और जीवन में भौतिक लालसा को संतुलित किया जाए। आज के समय में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वन विनाश और प्राकृतिक संसाधनों की हानि जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। गांधीजी का दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि विकास केवल भौतिक समृद्धि तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि प्राकृतिक संतुलन और सादगीपूर्ण जीवन को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उनके विचार आज की विकास नीतियों, पर्यावरण संरक्षण अभियानों और सतत विकास लक्ष्यों (क्ळे) के लिए प्रेरणादायक हैं। गांधीजी ने शिक्षा को केवल ज्ञान और तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत विकास होना चाहिए। गांधीवादी शिक्षा समाज में सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, आत्मनिर्भरता और नैतिक नेतृत्व का विकास करती है। आज के समाज में भ्रष्टाचार, असमानता और नैतिक पतन के खिलाफ गांधीवादी शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। उनके विचार यह स्पष्ट करते हैं कि केवल ज्ञान और तकनीकी दक्षता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों का पालन करना भी आवश्यक है।

गांधीजी के विचार महिलाओं की सशक्तिकरण और सामाजिक भागीदारी के क्षेत्र में भी आज अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया, जिससे महिलाओं में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता बढ़ी। यह दृष्टिकोण आज के समाज में महिलाओं के अधिकारों, समान अवसरों और निर्णय लेने की क्षमता को सुदृढ़ करने में मार्गदर्शक है। उनके अनुसार समाज का सच्चा विकास तभी संभव है जब सभी वर्गों के लोगों, विशेषकर महिलाओं और वंचितों, को समान अधिकार, सम्मान और अवसर प्राप्त हों। अतः गांधीजी के विचार केवल उनके समय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आज भी राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके अहिंसा, सत्याग्रह, सामाजिक न्याय, सर्वोदय, सादगीपूर्ण जीवन और नैतिक नेतृत्व के सिद्धांत आज के समाज, राजनीति, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण में मार्गदर्शक हैं। उनके दर्शन यह संदेश देते हैं कि स्थायी और न्यायपूर्ण समाज तभी संभव है जब अहिंसा, सत्य, सामाजिक समानता, सर्वोदय और नैतिक नेतृत्व को जीवन और नीति में व्यावहारिक रूप से लागू किया जाए। गांधीजी के विचार आधुनिक समाज को केवल राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से स्थायी और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीय एकता के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण और मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है। उनके नेतृत्व और विचारधारा ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष को दिशा दी, बल्कि इसे सर्वजन सम्मिलित, नैतिक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध आंदोलन में परिवर्तित किया। गांधीजी ने यह स्पष्ट किया कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना या शासन करना नहीं है, बल्कि इसका मूल उद्देश्य समाज में न्याय, समानता, सहयोग और शांति स्थापित करना होना चाहिए। उनके सिद्धांतों दृ सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज और सर्वोदय दृ ने भारतीय राजनीति को नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान किया, जिससे जनता को स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय, संगठित और नैतिक रूप से जागरूक भागीदारी के लिए प्रेरणा मिली। गांधीजी के नेतृत्व में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों के बीच एक साझा राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई। उनके प्रयासों के कारण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति नहीं हुई, बल्कि समाज में सामाजिक समानता, धार्मिक सद्भाव, महिलाओं की भागीदारी और कमजोर वर्गों का उत्थान भी सुनिश्चित हुआ। गांधीजी ने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होता है जब समाज का प्रत्येक वर्ग, विशेषकर वंचित और कमजोर व्यक्ति, समान अधिकार और सम्मान के साथ जीवन यापन कर सके। इस दृष्टिकोण ने स्वतंत्रता आंदोलन को सामूहिक संघर्ष और नैतिक जागरूकता का रूप दिया। इसके अतिरिक्त, गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं को एकता में परिवर्तित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने विभिन्न भाषाओं, धर्मों और जातियों के लोगों को एक साझा उद्देश्य के लिए संगठित किया। उनके विचार यह स्पष्ट करते हैं कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है; सामाजिक समरसता और नैतिक नेतृत्व के माध्यम से ही एक राष्ट्र स्थायी रूप से मजबूत और एकजुट बन सकता है। गांधीजी ने अपने जीवन और आंदोलनों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सत्य और अहिंसा केवल संघर्ष का साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज में विश्वास, सहयोग और नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए अनिवार्य हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी केवल स्वतंत्रता आंदोलन के नेता नहीं थे, बल्कि उन्होंने

भारतीय राष्ट्रीय एकता और समाज के सामूहिक विकास के लिए स्थायी नींव रखी। उनका राजनीतिक दर्शन आज भी राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है, और उनके सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक समाज, सामाजिक न्याय, समानता, महिलाओं की सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण और नैतिक नेतृत्व के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। गांधीजी का दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि सच्चा नेतृत्व और राष्ट्रीय एकता केवल राजनीतिक शक्ति तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और विकास में निहित होती है। उनका योगदान न केवल स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आज भी समाज, नीति और वैश्विक शांति के क्षेत्र में मार्गदर्शक और प्रेरक सिद्धांत प्रदान करता है। गांधीजी का जीवन और उनका राजनीतिक दर्शन हमें यह सीख देता है कि राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय और नैतिक नेतृत्व केवल आदर्श नहीं हैं, बल्कि उन्हें व्यावहारिक रूप से अपनाकर ही समाज और राष्ट्र का सच्चा कल्याण सुनिश्चित किया जा सकता है। उनके विचार और सिद्धांत आज भी हमें यह प्रेरणा देते हैं कि एक नैतिक, न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की स्थापना ही राष्ट्र के दीर्घकालिक स्थायित्व और समृद्धि की कुंजी है।

संदर्भ सूची

1. गांधी, एम. के. (1909). हिंद स्वराज. नवजीवन प्रकाशन।
2. गांधी, एम. के. (1927). आत्मकथाः मेरे प्रयोग की कहानी. नवजीवन प्रकाशन।
3. चकबर्ती, बिद्युत. (2006). महात्मा गांधी का सामाजिक और राजनीतिक चिंतन. रूटलेज।
4. नंदा, नरेन (संपादक). (2018). गांधी की नैतिक राजनीति. रूटलेज इंडिया।
5. गुहा, रामचन्द्र. (2017). भारत से पहले गांधीः महात्मा का निर्माण. पेंगुइन इंडिया।
6. गुहा, रामचन्द्र. (2018). गांधी के बहु आयामी एजेंडे. पेंगुइन बुक्स।
7. शार्प, जेरार्ड. (1979). गांधी एक राजनीतिक रणनीतिकार के रूप में. पोर्टर सार्जेंट।
8. पारेळ, ए. जे. (संपादक). (1997). 'हिंद स्वराज' एवं अन्य लेखन. केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. चंद्र, बिपन. (1988). भारत की स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई. पेंगुइन/ओरिएंट ब्लैकस्वान।
10. डाल्टन, डेनिस. (1993). महात्मा गांधीः सक्रिय अहिंसा की शक्ति. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. पारेळ, ए. जे. (2000). गांधी का दर्शन और सामंजस्य की खोज. केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. पारेख, भीखू. (1997). गांधीः एक संक्षिप्त परिचय. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. फिशर, लुई. (1950). महात्मा गांधी का जीवन. हार्परकॉलीन्स।
14. नंदा, बी. आर. (2002). महात्मा गांधीः एक जीवन चरित्र. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. पंथम, टी., तथा ड्यूल्च, के. एल. (संपादक). (2000). आधुनिक भारत के राजनीतिक विचार. सेज पब्लिकेशन्स।